सारथी – जरूरतमंद कलाकारों के मददगार

दोस्तों,

19 साल पहले (14 अगस्त 1988) को स्व. कमला देवी चटोपाध्याय जी ने हमारे बुनकरों द्वारा बनाया गया तिरंगा हुनरमंद कलाकारों की नई पीढ़ी को सौंपा था। उस दिन से आज तक हम सब बुनकर, दस्तकार, संगीतकार और लोक कलाकारों के साथ मिलकर हर वर्ष एक ख़ास विषय लेकर स्वतंत्रता दिवस मनाते आ रहें हैं।

इस वर्ष का विषय है.....

संग्राम और आज़ादी

7 मई 1857 को हज़ारों सिपाहियों ने मेरठ से दिल्ली की ओर कूच किया। वे आख़िरी मुग़ल शासक बहादुर शाह ज़फ़र से गुहार लगाने आये थे कि वे स्वतंत्रा की इस लड़ाई का नेतृत्व करें।

लाल क़िले पर इस घटना के ठीक 150 साल बाद भारत के सात सांस्कृतिक केन्द्रों से आये लगभग 2000 कलाकार–दस्तकार, नर्तक, नट, मार्शल कलाकार, अभिनेता, गाथा गीत गाने वाले कलाकार, संगीतकार और गायकों ने "संग्राम और आज़ादी" नामक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। जिसमें आज़ादी की लड़ाई के विविध स्तरों को दिखाया गया। इसने भारत के कोने–कोने से उठे हुए आन्दोलन और उसके उत्साह और प्रेरणा को भी परिभाषित किया।

'संग्राम और आज़ादी' का आयोजन 11 मई, 2007 को, भारत की पहली जंगे–आज़ादी की 150वीं जयंती के अवसर पर लाल क़िला मैदान में हुआ। पारम्परिक और क्षेत्रीय कलाओं का–समकालीन भूमिका में– मिडिया और ग्लोब्लाईज़ेशन के साथ सामन्जस्य स्थापित करना एक और संग्राम था। इस ऐतिहासिक कार्यक्रम की कल्पना और रचना कैसे की गई, उसका कोरे शब्दों में वर्णन शायद निरर्थक होगा।

खेल और युवा मामलों के मंत्री, श्री मणिशंकर अय्यर जिन्हें मैं बीस बरस से एक अदम्य पर साहसी मित्र के रूप में जानता हूँ, को इसके आयोजन का कार्य सौंपा गया। मणि ने मुझसे पूछा कि क्या मैं उद्घाटन समारोह के सांस्कृतिक अंग की तैयारी में उनकी मदद कर सकता हूँ। पहले तो मैं हिचकिचाया क्योंकि इतना बड़ा काम और इतना कम समय साथ में नौकरशाहों से टकराव जो किसी को भी हर क़दम पर ग़लत ठहरा सकते हैं। कुछ राजनीतिज्ञ जो इस तरह की घटनाओं को वोटबैंक या निजी स्वार्थ के रुप में देखते हैं से भी जूझना होगा। मिडिया को जवाब कौन देगा, जो कभी भी किसी विवाद मे फंसा सकते हैं। मुझे लगा यह काम मेरा नही है। किन्तु नेशनल इम्पलीमेन्टेशन कमेटी का सदस्य – आज़ादी की पहली लड़ाई की 150वीं वर्षगांठ कमेटी का अध्यक्ष और आज़ादी की 60वीं वर्षगांठ कमेटी का मेम्बर होने के नाते मुझे काम शुरू कर देना पड़ा।

आज की पीढ़ी के लिए "सन सत्तावन" की प्रासंगिता बहुत है। इतिहास ने यह सिद्ध करा दिया है कि '1857' में कैसे सब लोग बागी सिपाही, किसान, शहरी, साधारण जन और विशिष्टगण–जाति, मत या धर्म का विचार किए बिना ऐसे अवसर पर एक हो जाते हैं। 500 ज़िलों से आए हुए 50,000 नवयुवक, जो पूरे 150 साल बाद 7 मई को मेरठ में इकट्ठा हुए, फिर चार दिन उसी रास्ते पर चलकर लाल किले पहुँचे, कैसे प्रेरित हो सकते हैं–कुछ नई चुनौतियों के लिए–निरक्षरता से आज़ादी, अंधविश्वास से आज़ादी, लिंग–अन्याय से आज़ादी, सांप्रदायिकता से आज़ादी, रोग से आज़ादी, बंधुआ मज़दूरी से आज़ादी, बेरोज़गारी से आज़ादी ..... यह सूची और भी लंबी हो सकती है क्योंकि वास्तव में कठिन आज़ादियों की प्राप्ति के लिए सबका जीवन एक संग्राम ही है।

लाल क़िला वह जगह है जहाँ से 90 बरस बाद 1947 को स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं० जवाहर लाल नेहरू ने यूनियन जैक को नीचे करके तिरंगा झंडा फहराया–और यही वह जगह है ज़हाँ नेताजी सुभाषचंद्र बोस के 'दिल्ली चलो' के नारे ने लोगों को प्रेरित किया –और यही वह जगह है जहाँ इंडियन नेशनल आर्मी के सिपाहियों पर अंग्रेज़ों से लड़ने के लिए मुक़दमा चलाया गया और अंग्रेज़ों ने उन्हें दोषी सिद्ध करके दंड दिया।

इसी लिए 1857 के शहीदों को श्रद्धांजलि देने के लिए 'संग्राम और आज़ादी' विषय की प्रस्तुति के लिए इसी जगह को चुना गया – और इसी जगह पन्द्रह दशकों बाद 11 मई 2007 को देश के सभी बड़े नेता उसी अनुपम सच्ची कहानी को कलाकारों के हुनर द्वारा सुनने और देखने के लिए एकत्रित हुए।

'संग्राम और आज़ादी' की रिहर्सल के समय, समाज में कलाकारों के कर्तव्य और महत्व की बात को बार–बार दोहराया गया। कलाकार अपनी कला की शक्ति और मूल्य अच्छी तरह जानते हैं।

इतिहास में आज़ादी के प्रथम संघर्ष में कलाकारों का योगदान बहुत ही कम पढ़ने–सुनने को मिलता है। जबकि 1857 में, टेलीफ़ोन और टेलीविज़न से बहुत पहले, घुमन्तू गायक, भाट, चारण और गाथागीत गायक ही मौखिक प्रचार–प्रसार के मुख्य चैनल थे .... क्या हो रहा था, क्यों और कहाँ..... समाचार, विचारों के साथ–साथ फैल रहे थे..... विचारों का आदान–प्रदान हो रहा था ..... और योजनाओं का बार–बार निरीक्षण किया जा रहा था। 'संग्राम और आज़ादी' ने भी बग़ावत की बात फैलाने के लिए इसी चैनल का प्रयोग किया। मैंने कुछ गायकों को श्रोतागण के बीच में खड़ा कर दिया और उन्होंने महाभारत काल से लेकर भगत सिंह की शहादत तक की कथाएँ धीमे–धीमे स्वर में सुनाई। ढाडी और आल्हा गायक लाल किले पर

नेताओं के दोनों ओर खड़े थे और छत्तीसगढ़ की प्रसिद्ध पंडवानी गायिका तीजन बाई मंच के बीचों बीच खड़ी थी।

इन कलाकारों को देश के अत्यंत प्रभावी नेताओं के निकट रखने का उद्देश्य, उनकी विकट प्रतिभा और निपुणता प्रमाणित करना था क्योंकि आज स्वतंत्र भारत की योजना प्रक्रिया में पेशेवर कलाकारों की ओर ध्यान नही जाता। पंजाब के 'ढाडी' गायक का कहना है : "हम इस लिए गाते हैं क्योंकि हम कुछ और कर ही नहीं सकते".....गाने से भी तो देश की सेवा हो सकती है।

अगर यही सेवा भावना हमारे देश के नेताओं, नीति निर्माताओं और बाबूओं में हो और वे कला के चार स्तम्भों (बुनकर, दस्तकार, संगीतकार, लोक कलाकार) को ध्यान में रखकर अपनी नीतियाँ बनाये, जिनसे देश में सबसे ज़्यादा रोज़गार मिलता है, तो क्या देश में बेरोज़गारी रहेगी ?

अपने सारे कार्यक्रम और योजनाओं में, चाहे आंतरिक वास्तुकला हो, प्रदर्शनी हो या तमाशा, मैंने हमेशा अपनी पारम्परिक कलाओं की शक्ति को उजागर करने का प्रयास किया है। इस सिलसिले में मेरे साथी रॉयस्टन एबल का काम उल्लेखनीय है।

मैं यह नहीं चाहता था कि 1857 के बाग़ियों की बहादुरी और साहस को काग़ज़ी कट–आऊट्स और लहूलुहान जंग की पुनरावृत्ति के रुप मे प्रस्तुत किया जाए। मेरा ख़याल था कि यह बहुत ज़रूरी है कि एक सृजनात्मक प्रदर्शन हो, जिससे हर घटना एक प्रतीकात्मक अर्थ धारण कर ले और कथा–वर्णन साथ–साथ चलता रहे जो काव्य–प्रधान हो। जैसे समाघात की भाषा और मार्शल आर्ट्स जिसमें यौवनकाल की पौरूषयुक्त शक्ति स्पंदमान हो और प्रसंगाश्रित कविता की लय पर हो जो हमें वीर रस की अनुभूति से भिगो डाले। और कई मंचों पर 30 अलग आकृतियों को दिखाने से ऐसा लगे कि पूरे हिन्दुस्तान में आज़ादी के लिए संग्राम हो रहा है।

केरल से आए हुए समुद्र मंडल के नर्तकों ने, कलारीपैटु परम्परा से, बाग़ी सिपाहियों के रूप में बूढ़े और चिंताकुल बहादुर शाह ज़फ़र का गुणगान करके अंग्रेज़ों को ललकारने के लिए उकसाया।

महाराष्ट्र की मलखम्ब की महिला जिम्नास्टों ने एक बैले–नृत्य के रूप में, शवासन और अन्य जीवन दायक आसनों की मुद्राओं से सैकड़ों फांसी लगकर शहीद हुऐ देश भक्तों को श्रद्धांजली दी।

इसी तरह जनजातीय लड़के–लड़कियों का इन्सानी पिरामिड बनाना–उन्होंने नाचते हुए एक–दूसरे पर सवार होकर जो विस्मय प्रेरक शिखर बनाए, उसका मतलब था कि इन्सान संतुलन और आपसी तालमेल से हर बाधा को तोड़कर कामयाबी के शिखर को छू सकता है। मलखम्ब के डंडे पर हट्टे–कट्टे शरीर जीवन–वृक्ष बनाते हुए एक नया अर्थ अर्जित करते हैं।

एक आकार से दूसरे आकार में आकारिकी ..... लंगोट कसे जिम्नास्टों ने परस्पर निर्भरता के उलझे हुए विचार को सुलझाया और बहुविध राष्ट्र के लिए स्थिरता का आभास दिया।

जिस जगह 15 अगस्त, 1947 से हर साल तिरंगा लहराया जाता है, उस जगह को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए, भरतनाट्यम नर्तकी माल्विका सारूकाई ने शंखों की लय पर आकाश में उड़ते हुए पक्षियों के समान नृत्य किया।

इस तरह की कल्पनाओं में अर्थ निहित हैं, क्योंकि ये सारे विचार कलाकारों से बात करते–करते, बिना तैयारी के उपजे। और इन सबके साथ–साथ कुछ ऐसे रूपकों की तलाश जारी रही जिनसे 1857 से पहले और बाद के राष्ट्र–निर्माण की झलक मिले।

जिनके संग्राम से भारत आज़ाद हुआ, उन लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए हाव–भाव, गीत, स्वर और रंग एक प्रतीक बन गए।

हमारे पास समय बहुत कम था लेकिन श्रीमती अम्बिका सोनी के सक्रिय नेतृत्व में, संस्कृति विभाग के सातों क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों ने शानदार काम किया और भारत के दूरवर्ती क्षेत्रों से कलाकारों को स्क्रिप्ट के अनुसार एकत्रित कर दिया।

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले,
वतन पे मिटने वालों का यही बाकी निशां होगा।
हमने एक बाज़ार भी लगाया जो हर मेले का एक ज़रूरी हिस्सा होता है। चपाती चौक में डेढ़ सौ प्रकार की रोटी और व्यन्जन जो कमल के बीजों और डंठलों से तैयार किये गए थे। लोटस बाज़ार में महिलाओं के बनाए हुए ऐसे उत्पादन थे जिनसे आज़ादी और आर्थिक आज़ादी की संकल्पना झलकती थी।

कृष्णा नगर, लखनऊ, बनारस, कोंडापल्ली और बस्सी के खिलौने बनाने वालों ने 1857 से सम्बंधित व्यक्तियों और विषयों पर खिलौने बनाए। इंडियन कांऊसिल फॉर हिस्टॉरिकल रिसर्च ने पुराने ज़माने के प्रिंट्स की प्रदर्शनी लगाई जो 'संग्राम और आज़ादी' के साथ बहुत कामयाब रही।

हमारी कुछ कोशिशें मौसम के कारण न हो सकीं। दिल्ली में, जहाँ मई के महीने में बारिश नहीं होती, 11 मई की शाम को गॉल्फ़ बॉल के बराबर ओले पड़े। कलाकार, बाल कलाकार जो पिछले दस दिन से दिल्ली की गरमी से झुलस रहे थे, ओलों से खूब खेले। एक घंटे बाद जब बारिश रूकी तो कुछ भी सामान दुबारा प्रस्तुत करने लायक़ नही बचा था। सभी लोग उदास दिख रहे थे। तभी एक बच्चा (नट) मेरे पास आया और उंगली पकड़ कर बोला "क्या हम यह दोबारा कर सकते हैं?" मेरी आँखें नम हो गईं। देश की आज़ादी की लड़ाई मे हिस्सा लेने वालों की ज़रूर यही भावना रही होगी।

किसी भी समाज में कलाकार इतिहास से मिली हुई सीख के विषय में भावुक्ता से सोचते हैं। रिहर्सल के समय जब कलाकारों को 1857 में हिन्दुस्तानियों के गुलाम होने के बाद की समस्याओं के बारे में पता चला तो उन्होंने जो प्रश्न और मुद्दे उठाए, उनसे लगा कि आज भी हम उन्हीं प्रश्नों के घेरे में हैं और वैसी ही समस्याओं से आज भी जूझ रहे हैं।

पहले ईस्ट इंडिया कम्पनी और आज कई मल्टीनेशनल, जो हमारी खेती को उसी तरह तहस–नहस कर सकते हैं। नील की खेती से किसान मज़दूर बन गये और मशीनों के आने से हुनरमंद सहायक (हेल्पर)। मशीनो के आने से जितनी सुविधायें पैसे वालों को मिली उतनी ही बेरोज़गारी हुनरमंदों में बढ़ी है। सबसे पहला वार खादी पर हुआ, हेण्डलूम की जगह पावरलूम और मिलों ने ली तो कुल्हड़, बेन्त, बाँस व लकड़ी के फर्नीचर प्लास्टिक में बदल गये। समाज में इज़्ज़त नही मिलने की वजह से जूते बनाने जैसे काम हमने खुद ही छोड़ दिये।

मैं यह नही कहता कि सरकार या उसकी सारी नीतियाँ ग़लत है, लेकिन क्या यह पूरी तरह से कलाकारों के हित में है? अंग्रेज़ों ने राजाओं और नवाबों को बांटा तो सरकार ने कलाकारों के अलग–अलग मकहमे बना दिये। कहानी को पेंटिंग में उतार फिर उसे संगीत के साथ गा कर सुनाने वाले भोपा को ये नहीं मालूम कि वह किस मकहमे में आता है। सरकार को चाहिऐ ... । सभी कलाकारों का एक ही महकमा बनायें।

मैरे बार–बार सरकार को चिट्ठी लिखने और यह बताने का कि भारत की पहचान कलाकारी से है, अभी तक कोई फायदा नही हुआ। मंत्री से लेकर बाबूओं तक जिनके हाथ में देश का प्रशासन है शायद उनकी समझ में अभी तक यह नही आया की कंगूरे बनाने के लिए मज़बूत नीव की ज़रूरत होती है। अगर भारतवासियों की कलाकारी चली गई तो क्या हमारी संस्कृति बच पायेगी?

जो बात मैं हमेशा से आप लोगों से कहता आया हूँ आज फिर वही दोहराता हूँ कि हमे अपनी लड़ाई खुद लड़नी होगी। इस आज़ादी के संग्राम के जज़्बे को ख़त्म नही होने दें और अपने अधिकारों को पूरी तरह हासिल करने के लिए एक नये संग्राम की शुरूआत करें। अपनी आवाज़ को इतनी बुलन्दी दें कि बहरे हुए नीति निर्माताओं तक आप की आवाज़ पहुँच सके। मैं हमेशा सही मकसद में आप लोगों के साथ हूँ।

राजीव सेठी

राजीव सेठी

निमंत्रण

आप स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर झंडा रोहण के लिए आमंत्रित हैं । पिछले वर्षों की तरह इस बार किन्ही कारणो से सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन नहीं हो रहा है।

कार्यक्रम :

14 अगस्त 2007

09:30 बजे प्रातः———————— झंडा रोहण, राष्ट्रगान

कार्यक्रम स्थल –: भूले बिसरे कलाकार वर्कशॉप, कठपुतली कालोनी, शादीपुर डिपो, नई दिल्ली–110008 फोन : 25706189

शुभकामनायें

विनीत

राजीव सेठी

(राजीव सेठी)

सारथी नेहरु कला कुन्ज – फ्लेट न० 4, शंकर मार्किट, नई दिल्ली –110001
फोन : 0091–11–23411107, 23413744 फेक्स: 0091–11–23414065
ई–मेल: mail@sarthi.org, वेबसाईट : www.sarthi.org